The International Journal of Advanced Research In Multidisciplinary Sciences
(IJARMS)
Volume 1 Issue 1, 2018

egkRek xk/kh dk lokn; n'ku% ,d v/;;u

M, fot ; dqekj
एसोसिएट प्रोफेसर, बी एड विभाग,
रतनसेन महाविद्यालय, बाँसी , सिद्धार्थनगर

सर्वोदय विचार काल्पनिक नहीं है, यह समाज की पुनः रचना का एक व्यापक कार्यक्रम है। यह आवश्यक है कि समाज का एक ही रूप चले या एक ही प्रकार की व्यवस्था अपनाएं यद्यपि समय, स्थान और परिस्थितियों के अनुरूप बदलाव मानव स्वभाव का ही एक अपरिहार्य गुण हैं जो जीवन के अस्तित्व को बनाए रखने में सहायक है बदलाव का प्राथमिक गुण है। समकालीन परिदृष्य में बदलाव परिवर्तन, विकास और गतिशीलता को मूल्यों की अवधारणा के साथ जोड़ कर देखा जा रहा है। किसी एक क्षेत्र में क्रमिक विकास का जीवन बहुमुंखी है। अतः उसके जीवन में जब तक बहुमुंखी सुधार नहीं होते है तब तक उसका विकास अधूरा है। गांधी जी मानव की दशा सुधारने के लिए सदा चिंतित रहते थे। उनके सम्पूर्ण विचार मानव केन्द्रित है। वे मनुष्य और मानव समुदाय को इकाई मानते हुए सम्पूर्ण व्यवस्था में आमूल परिवर्तन के पक्ष में थे। गांधी जी के अनुसार जीवन के सभी पक्षों में मूलभूत परिवर्तन ही मानव का वास्तविक विकास कर सकता है, और मनुष्य को वास्तविक मानव बना सकता है। इस संदर्भ में गांधी जी ने सर्वोदय दर्शन दिया, जिससे समानता, न्याय और भ्रातृत्व के आदर्शों को अत्यधिक बल मिला। "गांधी जी की सर्वोदय सम्बन्धी अवधारणा उनके विचार दर्शन का सार है। उनका प्रमुख विचार केन्द्र सम्पूर्ण समाज का उदय और विकास है जिसकी परिकल्पना उन्होंने अपने सर्वोदय सम्बन्धी विचारों में अभिव्यक्त की है। गांधी जी का मानना है सर्वोदय एक जीवन दर्शन, एक जीवन पद्धति और नए समाज की रचना की दिशा में किया जाना वाला स्तुत्य प्रयास है।'' चूंकि गांधी जी साध्य एवं साधना की एकता में विश्वास करते है, इसीलिए उनके लिए सर्वोदय एक साधन है और साथ ही साध्य भी गांधी जी के अनुसार, सर्वोदय प्रत्येक मानव एवं समाज का परम लक्ष्य है। अतः उस तक पहुंचना सब का परम कर्तव्य है। सर्वोदय के मार्ग में पहाड़ भी आ सकते है, वेगवती नदियां भी रास्ते में बाधा स्वरूप आ सकती है और बड़े–बड़े खड्डे खाइयां आदि भी आ सकती है किंतु इन बाधाओं के होते हुए भी हमें अपने परम लक्ष्य की जाने से कोई रोक नहीं सकता। इसी इच्छा शक्ति के आधार पर हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते है।''

सर्वोदय' शब्द गांधी द्वारा प्रतिपादित एक ऐसा विचार है जिसमें 'सर्वभूत हितेश्ताः' की भारतीय कल्पना, सुकरात की 'सत्य–साधना' और रस्किन की 'अंत्योदय की अवधारणा' सब कुछ सम्मिलित है। गांधीजी ने कहा था" मैं अपने पीछे कोई पंथ या संप्रदाय नहीं छोड़ना चाहता हूँ।" यही कारण है कि सर्वोदय आज एक समर्थ जीवन, समग्र जीवन, तथा संपूर्ण जीवन का पर्याय बन चुका है।

'सर्वोदय' एक सामासिक शब्द है जो 'सर्व' और 'उदय' के योग से बना है, सर्वोदय एक ऐसा अर्थवान शब्द है जिसका जितना अधिक चिंतन और प्रयोग हम करेंगे, उतना ही अधिक अर्थ उसमें पाते जायेंगे। सर्वोदय शब्द के दो अर्थ मुख्य हैं– सर्वोदय अर्थात् "सबका उदय", दूसरा "सब प्रकार से उदय।" अथवा सर्वांगीण विकास इसका अर्थ अलग–अलग दृष्टिकोण से अलग–अलग है जैसे भौतिकतावादी अपनी बढ़ी हुई आवश्यकता की पूर्ति में लगा रहता है और आध्यात्मवादी ब्रह्म–प्राप्ति या मोक्ष प्राप्ति में रत रहता है।
आज जिस अर्थ में सर्वोदय हमारे सामने प्रस्तुत है उसकी आधारशिला सर्वप्रथम गांधी जी ने रस्किन की 'अंटु दिस लास्ट' पुस्तक के संक्षिप्त गुजराती अनुवाद में रखी है। गांधी जी ने लिखा है" इस पुस्तक का उद्देश्य तो सबका उदय यानि उत्कर्ष करने का है, अतः मैने इसका नाम सर्वोदय रखा है।"

स्वतंत्रता से पूर्व स्वराज शब्द का जो महत्व था वही महत्व सर्वोदय शब्द का आज है। आज सर्वोदय का संपूर्ण शास्त्र विकसित हो रहा है उसकी राजनीति, अर्थनीति, शिक्षानीति, धर्मदर्शन इत्यादि 'सर्वोदय समाज' नामक आस्था रखने वालों का एक आध्यात्मिक भाईचारा भी बना है और 'सर्व सेवा संघ' नामक संस्था भी है। डॉ. राममनोहर लोहिया ने गांधीवादी विचार एवं प्रवृत्तियों को बहुत ही नजदीक से देखा था। उनका मानना था कि 1916 से चले गांधी का सर्वोदय 1948 (गांधी के हत्या के बाद) में तीन प्रकार हो चुका है। ये हैं– सरकारी गांधीवादी, मठी गांधीवादी और कुजात गांधीवादी।"

महात्मा गांधी ने 1936 में यह घोषणा की थी कि "गांधीवाद नाम की कोई चीज है ही नहीं" गांधी जी मूलतः एक प्रयोगकर्ता थे इसलिए उन्होंने अपनी आत्मकथा को "सत्य का प्रयोग" कहा है। सत्य एवं अहिंसा का समन्वय ही उनके जीवन का लक्ष्य था। अतः उन्होंने किसी नए तथ्य या सिद्धांत का अविष्कार नहीं किया।" इसलिए गांधी विचार और फिर उस पर आधारित सर्वोदय विचार का अर्थ निश्चित खाका तैयार किया हुआ जीवन का पूरा–पूरा चित्र है, वाद नहीं है। 'वाद' का मतलब कोई ऐसा महत्वपूर्ण शास्त्र जिससे जीवन संबंधी सभी समस्याओं का जवाब हासिल कर लिया जाये तो भी गांधीवाद या सर्वोदयवाद कोई चीज नहीं है। लेकिन जीवन व्यवहार के लिए कुछ आधारभूत नैतिक एवं समाजिक सिद्धांतों को स्वीकार करना हो तो मानना होगा कि 'गांधीवाद' है। सर्वोदय की परिभाषा पर अलग–अलग विद्वानों ने अलग–अलग मंतव्य दिए हैं।

विनोबा भावे के अनुसार, "सर्वोदय का अर्थ है सर्व सेवा के माध्यम से समस्त प्राणियों की उन्नति। हम अधिकतर के सुख से नहीं सबके सुखी होने से संतुष्ट हैं। हम उँच–नीच, अमीर–गरीब, सबकी भलाई से ही संतुष्ट हो सकते हैं।"
किशोरी लाल मशरूवाला के अनुसार, "गांधीवाद को हम 'सर्वोदयवाद' तथा 'सत्याग्रह मार्ग' कह सकते हैं। "
काका साहेब कालेलकर के अनुसार, गांधीवाद को 'गांधी मार्ग' या 'गांधी दृष्टि' कहा जा सकता है। "

आचार्य जे. बी. कृपलानी के अनुसार गांधीवाद को सर्वोदयकारी समान व्यवस्था कहा जा सकता है।"

प्रख्यात मार्क्सवादी चिंतक यशपाल के अनुसार, गांधी के विचारों को 'गांधीवाद' ही कहना ठीक होगा।" उपर्युक्त विद्वानों के गांधीवाद के संबंध में प्रतिपादित विचारों से ऐसा लगता है कि गांधी ने भले ही अपने विचारों को किसी 'वाद' से नही जोड़ा लेकिन गांधी विचार–दर्शन को 'गांधीवाद' कहना एकदम सत्य होगा। यदि हम गांधी द्वारा प्रतिपादित विचारों के परिप्रेक्ष्य में आज की व्याख्या करना चाहते हैं तो यह उपयुक्त होगा। नैतिक जीवन में सहजीवन अपने आप में बड़ा मूल्य है। जिस व्यवहार की अपेक्षा हम खुद करते हैं, वही बर्ताव दूसरों के साथ भी करें।

महात्मा गांधी अनुसार व्यक्ति का कल्याण समाज कल्याण में निहित है, अतः सहजीवन कोई परमार्थ का सूत्र नहीं बल्कि जीवन का आधार है। लेकिन सहजीवन की साधना साम्ययोग के बिना संभव नहीं। इसलिए सर्वोदय विचार की यह मान्यता है कि " चाहे वकील का काम हो या नाई का, दोनों का मूल्य बराबर है।" सर्वोदय दृष्टि से मजदूर किसान या कारीगर का जीवन ही सच्चा एवं सर्वोत्कृष्ट है।" पसीना बहाकर रोटी खाना ही यज्ञ है।"

मानव समाज के उत्थान के लिए विविध प्रवृत्तियों का विकास हुआ लेकिन वे प्रवृत्तियां मात्र कुएं के मेढ़क के सदृश हो गयीं। फलतः उनका वैचारिक अधिष्ठान लुप्तप्राय हो चुका है। इस लिए गांधी ने माना कि शरीर नश्वर है तथा विचारों का कभी विनाश नहीं होता क्योंकि कहा गया है कि शब्द ही ब्रह्म है। अर्थात् शब्द की महत्ता का प्रतिपादन केवल गांधी ने नहीं किया था। उन्होंने तो सर्वोदय को जिया। भारतीय समाज में व्याप्त शोषण, उत्पीड़न, आर्थिक, सामाजिक विषमता पर प्रहार के साथ संयम, अपरिग्रह, त्याग द्वारा संपूर्ण भारत को आलोकित किया।

महात्मा गांधी ने अपने सर्वोदय दर्शन के द्वारा संघर्ष का सूत्रपात किया।" महात्मा गांधी ने भारतीय जीवन–मूल्यों से प्रभावित होकर सत्याग्रह, अपरिग्रह तथा सविनय अवज्ञा रूपी आंदोलनों का सूत्रपात किया। उसमें उन्हें पर्याप्त रूप से सफलता मिली बल्कि अस्पृश्यता, शराबबंदी तथा खादी ग्रामोद्योग द्वारा आर्थिक अन्याय का बहुतायत में मुकाबला किया गया। अन्याय का प्रतिकार ही उनके जीवन का लक्ष्य था।"

सर्वोदय कोई संप्रदाय नहीं यह तो एक मानव एकता, सेवा तथा समरसता की भावना से समग्र दृष्टि है जो पूर्णरूपेण भारतीय चिंतन का पर्याय है। इसमें भारतीय एवं पाश्चात्य विचारों के परिपेक्ष्य में गांधी ने सबके अंदर परमात्मा का स्वरूप देखा। गांधी द्वारा प्रतिपादित सर्वोदय विचार में त्याग के द्वारा हृदय–परिवर्तन, तर्क एवं अध्ययन द्वारा वैचारिक परिवर्तन, शिक्षा के द्वारा मानवता का परिवर्तन तथा पुरूषार्थ द्वारा स्तर परिवर्तन पर जोर है। इसमें डॉ. लोहिया की 'सप्त क्रांतियां', लोकनायक जयप्रकाश नारायण का 'चौखंभा राज्य', मार्क्स की 'वर्गविहीन व्यवस्था' गांधी का 'रामराज्य' तथा सावरकर–हेडगेवार के 'हिंदू राष्ट्र' का साक्षात् दर्शन होता है। इसमें समाजिक व्यवस्था को बदलकर प्रेम एवं अहिंसा को स्थान मिलता है। इसमें मार्क्स की भांति

साध्य–साधन में भेद न करके साध्य की प्राप्ति के लिए अहिंसा, प्रेम, सद्भाव, मित्रता का सर्वोपरि स्थान रहता है।

महात्मा गांधी के सर्वोदय दर्शन पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालने पर ऐसा अभास होता है कि वर्तमान युग में जहां हिंसा, अतिसंग्रह, मतभेद, धर्मांधता, क्षेत्रवाद, जातिवाद, लैंगिक भेदभाव, नस्लभेद तथा राष्ट्रभेद का सर्वत्र नंगा नाच हो रहा है। वहां महात्मा गांधी भारतीय संस्कृति के माध्यम से संपूर्ण विश्व को बदलने के लिए सत्य एवं अहिंसा को मुख्य अस्त्र–शस्त्र मानते हैं तथा संपूर्ण समस्याओं का समाधान चाहते हैं। आज जहां मुठ्ठी भर लोग सुख भोग रहे हैं वही देश की चालीस प्रतिशत जनता न्यूनतम मजदूरी पर जीवनयापन कर रही हैं। यह गांधी के सर्वोदय दर्शन द्वारा ही सुलझाया जा सकता है। इसके साथ–साथ राज्यसत्ता, धर्मसत्ता, अर्थसत्ता, संतसत्ता तथा बौद्धिकसत्ता का समन्वय करके सर्वोदय दर्शन को लागू किया जा सकता है।
महात्मा गांधी रस्किन की प्रसिद्व पुस्तक ''अन टू दी लास्ट'' से बहुत अधिक प्रभावित थे। गांधी जी के द्वारा रस्किन की इस पुस्तक का गुजराती भाषा में किया गया। इसमें तीन आधारभूत तथ्य थे–

सबके हित में ही व्यक्ति का हित निहित है। एक नाई का कार्य भी वकील के समान ही मूल्यवान है क्योंकि सभी व्यक्तियों को अपने कार्य से स्वयं की आजीविका प्राप्त करने का अधिकार होता है, और श्रमिक का जीवन ही एक मात्र जीने योग्य जीवन है।

गांधी जी ने इन तीनों कथन के आधार पर अपनी सर्वोदय की विचारधारा को जन्म दिया। सर्वोदय का अर्थ है सब की समान उन्नति। एक व्यक्ति का भी उतना ही महत्व है जितना अन्य व्यक्तियों का सामूहिक रूप से है। सर्वोदय का सिद्वान्त गांधी ने बेन्थम तथा मिल के उपयोगतिवाद के विरोध में प्रतिस्थापित किया। उपयोगितावाद अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख प्रदान करना पर्याय माना। उन्होने कहा कि किसी समाज की प्रगति उसकी धन सम्पत्ति से नहीं मापी जा सकती, उसकी प्रगति तो उसके नैतिक चरित्र से आंकी जानी चाहिये। जिस प्रकार इंग्लैण्ड में रस्किन तथा कार्लाईल ने उपयोगितावादियों को विरोध किया, उसी प्रकार गांधी ने मार्क्स से प्रभावित उन लोगों के विचाारों का खण्डन किया जो भारतीय समाज को एक औद्योगिक समाज में बदलना चाहते थे।

सर्वोदय समाज अपने व्यक्तियों को इस तरह से प्रशिक्षित करता है कि व्यक्ति बडी से बडी कठिनाइयों में भी अपने साहस व धैर्य कसे त्यागता नहीं है। उसे यह सिखाया जाता है कि वह कैसे जिये तथा सामाजिक बुराइयों से कैसे बचे। इस तरह सर्वोदय समाज का व्यक्ति अनुशासित तथा संयमी होता है। यह समाज इस प्रकार की योजनाएं बनाता है जिससे प्रत्येक व्यक्ति को नौकरी मिल सके अथवा कोई ऐसा कार्य मिल सके जिससे उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। इस समाज में प्रत्येक व्यक्ति को श्रम करना पडता है।
सर्वोदय समाज पाश्चात्य देशों की तरह भौतिक संम्पन्नता और सुख के पीछें नहीं भागता है और न उसे प्राप्त करने की इच्छा ही प्रगट करता है, किन्तु यह इस बात का प्रयत्न करता है कि सर्वोदय समाज में रहने वाले व्यक्तियों जिनमें रोटी, कपडा, मकान, शिक्षा आदि है कि पूर्ति होती

रहे। ये वे सामान्य आवश्यकताओं हैं जो प्रत्येक व्यक्ति की हैं और जिनकी पूर्ति होना आवश्यक है।

सर्वोदय की विचारधारा है कि सत्ता का विकेन्द्रकीकरण सभी क्षेत्रों में समान रूप् में करना चाहिए क्योंकि दिल्ली का शासन भारत के प्रत्येंक गांव में नहीं पहंचु सकता। वे आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में सत्ता का विकेन्द्रीकरण करने के पक्षधर है। इस समाज में किसी भी व्यक्ति का शोषण नही होगा क्योंकि इस समाज में रहने वाले व्यक्ति आत्म संयमी, धैर्यवान, अनुशासनप्रिय तथा भौतिक सुखों की प्राप्ति से दूर रहते है। इस समाज के व्यक्ति भौतिक सुखों के पीछे नही भागते, इसलिए इनके व्यक्तित्व में न तो संद्यर्ष है और ही शोषणता की प्रवृति ही । यह अपने पास उतनी ही वस्तुओं का संग्रह करते हैं, जितनी इनकी आवश्यकताएं है।
गांधी का मत था कि भारत के गांवों का संचालन दिल्ली की सरकार नहीं कर सकती। गांव का शासन लोकनीति के आधार पर होना चाहिए क्योंकि लोकनीति गांव के कण कण में व्यापत है। लोकनीति बचपन से ही व्यक्ति को कुछ कार्य करने के लिए प्रेरित करती है और कुछ कार्य को करने से रोकती है। इस तरह व्यक्ति स्वतः अनुशाषित ही बन जाता है। सर्वोदय का उदय किसी एक क्षेत्र में उन्नति करने का नही है बल्कि सभी क्षेत्रों में समान रूप से उन्नति करने का है। वह अगर व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कटिबद्व है तो व्यक्ति को सत्य, अहिंसा और प्रेम का पाठ पढाने के लिए भी दृढसंकल्प है।

lUnHk lph

1. सिंह, राम जी, गांधी दर्शन मीमांसा, बिहार , हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1973
2. गांधी, महात्मा, आत्मकथा, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1987
3. मिश्र, अनिल दत्त, गांधी एक अध्ययन, पियर्सन, नई दिल्ली, 2012
4. गांधी, एम0 के0., सर्वोदय, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1957
5. चंदेल, धर्मवीर, गांधी चिंतन के विभिन्न पक्ष, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2012
6. गांधी, एम.के., मेरे सपनों का भारत, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1960
7. महावर, सुनील, "गांधी जी का सर्वोदय दर्शन एक विचार दृष्टि, द्वारा उद्धत विद्या जैन, गांधी दर्शन सामयिक संदर्भ, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2012
8. गंगल, ए.सी., गांधीयन थॉट एण्ड टेक्नीक्स इन द मॉडर्न वर्ल्ड, क्रोइटेरीयन पब्लिकेशन्स, न्यू देहली, 1988